मुगलकालीन हिन्दुओं की वेशभूषा : एक संक्षिप्त अवलोकन

विनय कुमार पटेल
शोध छात्र
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

हिन्दू समाज के उच्च वर्ग के पुरुष अपनी आर्थिक सम्पन्नता के कारण हीरे–जवाहरात एवं शुद्ध सोना–चाँदी से युक्त जगमगाते बहुमूल्य वस्त्र धारण करते थे। उच्च वर्ग के लोगों के वस्त्रों में शान–शौकत व वस्त्रों की विविधता देखने को मिलती है।

मलिक मुहम्मद जायसी ने लिखा है कि, रत्नसेन के लिए लाल रंग का *'दगला'* पहनने के लिए लाया गया। उन्होंने कनक वस्त्र, सूती वस्त्र एवं धोती का भी उल्लेख किया है।[1]

बंगाल में उच्च वर्ग के हिन्दू एक ढीला वस्त्र पहनते थे जिसे *'अंगरखा'* वस्त्र कहते थे। कुलीन हिन्दुओं द्वारा जिस प्रकार की चादर कन्धों पर डालने के लिए प्रयोग में लायी जाती थी, उस चादर में जरी की कढ़ाई होती थी।[2] जाड़े में ये लोग ऊनी शाल का प्रयोग करते थे। यहाँ आकर्षक शलें विभिन्न रंगों की काश्मीर से मंगायी जाती थीं। उच्च वर्ग के हिन्दू उस समय कमर में *'पटका'* बांधते थे जो रंगीन कपड़ों से बना होता था, इसे *'कमरबन्द'* भी कहते थे।

'दलपतविलास' में पुरुषों के परिधानों में *'बागा'* का उल्लेख है।[3] नारायण दास ने अपनी *'छिताई वार्ता'* में *क़बा, बागा* का उल्लेख किया है।[4] हिन्दू एवं मुसलमान अमीरों की वेशभूषा में अन्तर कर सकना कठिन था। अन्तर केवल इतना ही था कि हिन्दू अपने माथे पर तिलक लगाते थे और कानों में कुण्डल पहनते थे। हिन्दुओं के लिए पगड़ी पहनना प्रतिष्ठा का चिन्ह था। ये बंगाल के मलमल से बनी पगड़ी पहना करते थे। कभी–कभी वे अपने बालों को जरी के कपड़े की रूमाल या पटके से बाँधी लिया करते थे जो कि उनके सिर पर पहने जाने वाले परिधान के रूप में दिखाई पड़ता था।[5]

उच्च वर्गीय हिन्दू अपने कन्धों पर दुपट्टा रखते थे। इस वस्त्र को *'उत्तरिया'* कहते थे। *उत्तरिया* सूती या रेशम की बनी होती थी। जाड़ों में उत्तरिया के स्थान पर हल्की ऊनी शाल या मंगली अपने शरीर के ऊपरी भाग को ढकने के लिए प्रयोग करते थे। कभी–कभी वो एक हल्का वस्त्र अपने कन्धों पर डाल लिया करते थे, जिससे कि उनके शरीर का ऊपरी भाग ढका रहे, इस

वस्त्र को *'पिछौरी'* कहते थे। कमर में पटका, पुर, फेट नामक वस्त्र पहनकर शरीर के निचले भाग को ढकते थे।

हिन्दू समाज का मध्यम वर्ग उच्च वर्ग के समान ही वस्त्र पहनता था। मध्यम वर्ग के हिन्दुओं के वस्त्र साधारण कम मूल्य के हुआ करते थे। सूरदास, दादूदयाल, तुलसीदास, केशवदास की रचनाओं में पौराणिक चरित्रों का चित्रांकन करते समय जहाँ एक ओर स्त्री, पुरुषों एवं बालकों के परम्परागत आभूषणों का वर्णन हुआ है, वहीं दूसरी ओर समकालिक साज–सज्जा तथा प्रचलित विविध रंगों, अनेक प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख हुआ है।

मध्यम वर्ग के अन्तर्गत व्यापारी, व्यवसायी जैसे हकीम, वैध एवं निचले स्तर के अधिकारी होते थे। मध्यम वर्ग के पुरुष धोती, चादर, सिर पर पगड़ी या टोपी धारण करते थे। धोती के अतिरिक्त वे *कमरबंद* या *पटका* का भी प्रयोग करते थे। *पटका* का प्रयोग वो शाल के रूप में भी किया करते थे। कभी–कभी वे *जामा, क़बा* या *ढीला कुर्ता* भी पहनते थे। पुरुषों द्वारा जामे के प्रयोग का वर्णन सूरदास तथा दादूदयाल ने किया है।[6] गाँवों में रहने वाले धनी लोग शान–शौकत का जीवन व्यतीत करते थे। सूरदास ने अनेक प्रकार के व्यंजनों एवं वस्त्रों का उल्लेख किया है जो समारोहों के अवसर पर उनके घरों में बनाये जाते थे। इस वर्ग की स्त्रियाँ अनेक प्रकार की बहुरंगी साड़ियाँ पहनती थीं और पुरुष लोग शहर में रहने वालों की तरह जामा एवं क़बा पहनते थे। इससे प्रकट होता है कि जिन गाँवों में ये लोग रहते थे, वो शहर के बाजारों से अलग–थलग नहीं होते थे।

यह वर्ग सम्पन्न था तथा सामाजिक उत्सवों में और शादी–विवाह, जन्मोत्सव, मृत संस्कार, त्यौहार, धर्म–यात्राओं आदि में अधिक धन व्यय करता था। सोने–चाँदी के रूप में धन संग्रह की भावना इस वर्ग के लोगों में थी। इस वर्ग के लोगों ने समाज सेवा के लिए धन दान के रूप में देकर अनेक कुँए, धर्मशालाएँ, मन्दिर व स्कूल का निर्माण करवाया।[7]

हिन्दू समाज के निम्न वर्ग के दरिद्र, निःसहाय गरीब, नीची जाति के लोग अपनी आर्थिक स्थिति के कारण शरीर पर केवल एक ही वस्त्र धारण करते थे। वे कमर से घुटनों तक के भाग को ढकने के लिए एक लम्बा चौड़ा कपड़ा कमर के चारो ओर बाँधते थे जिसे *'वेदकूल कछनी'* कहते थे।[8] ये लोग *लंगोटी* भी बाँधते थे।

बाबर की आत्मकथा एवं अन्य यूरोपीय यात्रियों के विवरण से ज्ञात होता है कि साधारण वर्ग की स्थिति बड़ी दयनीय थी। *बाबरनामा* में बाबर लिखता है कि, 'कृषक एवं निम्न वर्ग के लोग

अधिकांश नंगे रहते थे। वे लोग एक पत्ते का टुकड़ा बाँधते हैं जो *'लंगोट'* कहलाता है। स्त्रियाँ भी *लुंगी* बाँधती हैं। इसका आधा भाग कमर के नीचे होता है और दूसरा सिर पर डाल लिया जाता है।'[9]

अबुल फज़ल ने *आईन–ए–अकबरी* में लिखा है कि, बंगाल में अधिकांश स्त्री व पुरुष नंगे ही घूमते थे। केवल एक *लुंगी* बाँधते थे। भारत की जनंसख्या का अधिकांश भाग बांस की झोपड़ियों, घास से बनी झोपड़ियों, गोबर व सूखे कीचड़ की दीवारों के मकान में रहती थी। कहीं–कहीं लकड़ी के मकान थे जिन्हें आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाया जा सकता था।[10]

हिन्दू समाज के निम्न वर्गों की स्थिति दयनीय थी। वह मोटे वस्त्र का प्रयोग करते थे। अपने शरीर को ढकने के लिए *धोती, लंगोटा* व *लुंगी* पहना करते थे। कभी–कभी वह अपने शरीर को ढक पाने में असमर्थ भी रहते थे। सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य में विशेषकर आगरा से लेकर लाहौर तक के मध्य क्षेत्र में जनसाधारण प्रायः अर्द्धनग्न अवस्था में ही रहते थे। ये लोग किसी त्यौहार पर भी अच्छे वस्त्रों का प्रयोग नहीं कर पाते थे। इनकी आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय होती थी कि इनके घर की स्त्रियाँ, बच्चे सभी प्रयः अर्द्धनग्न अवस्था में रहते थे।

सूरदास ने भी *'सूरसागर'* में इस वर्ग की दयनीय स्थिति के बारे में लिखा है, वो लिखते हैं कि पुरुष प्रायः अपने तन को ढकने के लिए एक ही वस्त्र का प्रयोग करते थे। यह वस्त्र मोटे जूट के रेशों से बना होता था। इस वस्त्र को वे तब तक प्रयोग करते थे, जब तक कि वो फट न जाए। इनके बच्चे हमेशा नग्न अवस्था में रहते थे। स्त्रियाँ भी एक धोती से अपने शरीर के मुख्य अंगों को ढकती थीं, शेष शरीर नग्न रहता था।[11] इस वर्ग की पोशाकों में कहीं भी बटन लगाये जाने का उल्लेख नहीं मिलता है। सम्भवतः बटनों का प्रयोग करने का उनमें प्रचलन नहीं था। धागा, झग्गा इत्यादि प्रकार के परिधान बन्दतनी या परिधानों में लगे हुए बन्द से बांधे जाते थे।

सन्दर्भ सूची

1. जायसी, मलिक मु0 : *पद्मावत,* सम्पादन : वाराणसी, 1968, पृ0 269.
2. भारत चंद ग्रन्थावली : *बंग साहित्य परिषद,* भाग–2, कोलकाता, 1986, पृ0 5.
3. दलपत विलास : सम्पादन : पटना, 1922, पृ0 47.
4. नारायण दास : *छिताई वार्ता,* सम्पादन : पटना, 1994, पृ0 14.

5. गुप्त, शिवकुमार : *मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति,* जयपुर, 1999, पृ0 241–42.

6. वर्मा, हरिश्चन्द : *मध्यकालीन भारत,* नयी दिल्ली, 2014, पृ0 486–87.

7. गुप्त, शिवकुमार : *मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति,* जयपुर, 1999, पृ0 244–45.

8. तुलसीदास, गोस्वामी : *रामचरित मानस,* वाराणसी, पृ0 246.

9. बाबर, जहीरूद्दीन मु0 : *बाबरनामा,* अनु0 बैवरिज, लंदन, 1905, पृ0 196–99.

10. अल्लामी, अबुल फजल : *आईना–ए–अकबरी,* अनु0 ब्लाकमैन, भाग 1, नयी दिल्ली, 2008, पृ0 389.

11. गुप्त, शिवकुमार : *मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति,* जयपुर, 1999, पृ0 185–86.